दादा भगवान परिवार का

जून २०१९

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

छुट्टियों का मजा

छुट्टियों का मज़ा

संपादकीय

बालमित्रों,

आपको ऐसा लगता होगा कि छुट्टियाँ तो खत्म हो गई फिर यह अंक?

हाँ। इस बार हमने वेकेशन में श्री राम भगवान और श्री हनुमान की भक्ति की, ठीक है न? इसलिए अब छुट्टियों में मज़े करवाने वाला यह अंक ज़रूर पढिए। इससे स्कूल शुरू होने की बोरियत उड़ जाएगी।

इस अंक में आर्य संस्कारों को सजीवन करने वाली छोटी-छोटी सुंदर कहानियाँ हैं। जिन्हें पढ़कर हमारे जीवन में उन संस्कारों का सिंचन होगा और हम आदर्श जीवन जी सकेंगे।

अतः छुट्टियाँ तो भले पूरी हो गई लेकिन मज़ा अभी भी ज़ारी ही है।

- डिम्पल मेहता

Akram Express

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2019, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

वर्ष : ७ अंक: ३
अखंड क्रमांक: ७६
जून २०१९

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :२०० रुपए
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१२ पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ८०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ५० पाउन्ड
D.D/ M.O'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

श्लोक और मोक्ष

स्वामी नारायण संप्रदाय के स्थापक श्री सहजानंद स्वामी जगह-जगह उपदेश देते। लोगों को सही रास्ते पर मोड़ते। लूटपाट करने वाली जाति भी उनके उपदेश से बदल गई। लोग बुराई की जगह भलाई करने लगे।

एक बार श्री सहजानंद स्वामी से मिलने के लिए दीनानाथ भट्ट नामक संस्कृत के महान पंडित आए। उनकी पंडिताई के आगे अच्छे-अच्छे पानी भरते थे। उन्हें अनगिनित श्लोक याद थे। उनके साथ वाद-विवाद में आने की किसी की हिंमत नहीं थी।

ऐसे पंडित जी का श्री सहजानंद स्वामी ने आदर किया और उनसे पूछा, "आप तो संस्कृत के महान शास्त्री हैं। आपकी विद्वता की सभी ओर प्रशंसा होती है। आपकी यादशक्ति भी अजोड़ है। एक प्रश्न पूछूँ?

"पूछिए, ज़रूर पूछिए।" शास्त्री दीनानाथ भट्ट को लगा कि स्वामी जी उनकी परीक्षा लेने चाहते हैं।

श्री सहजानंद स्वामी ने पूछा, "आपको कितने श्लोक याद हैं?"

पंडित दीनानाथ भट्ट ने जवाब दिया, "पूरे अठारह हज़ार! कहें तो अभी गाकर सुना दूँ।"

श्री सहजानंद स्वामी ने प्रश्न किया, "मुझे वे श्लोक नहीं सुनने हैं, लेकिन आपसे यह जानना है कि इन अठारह हज़ार श्लोक में से कितने श्लोक आपको मोक्ष दिलाने में सहायता करेंगे?"

पंडित जी तो गंभीरता से सोचने लगे। उन्होंने अभी तक श्लोक का विचार किया था, मोक्ष का नहीं। इसलिए उन्होंने कहा, "ओह! स्वामी जी! ऐसा तो मैंने कभी नहीं सोचा था। ऐसा हिसाब तो मैंने कभी नहीं किया था।"

"तो फिर इतने सारे श्लोक याद रखने का अर्थ ही क्या है? ऐसे तो तोता भी श्लोक बोल लेता है? जो शास्त्र मुक्ति नहीं दिलाते उनका अभ्यास करने का क्या लाभ? इससे क्या आत्मा का कल्याण हो जाएगा?

विद्वता के सागर पंडित दीनानाथ जी स्वामी जी के समक्ष झुक गए। उन्होंने विद्वता ही धारण की थी, लेकिन उसका मर्म स्वामी जी से मिला।

मीठी याद १

यह उस समय की बात है जब नीरू माँ दादा दर्शन में रहते थे। एक ब्रह्मचारी भाई स्कूटर पर जाते थे। एक बस के साथ उनका स्कूटर टकरा गया। वे गिर गए और चोट लग गई और उनका स्कूटर भी टूट गया। जब उस भाई की आँखें खुली तब तुरंत ही ज्ञान हाज़िर हो गया कि व्यवस्थित है। इसमें किसी का दोष नहीं है। निमित्त आया और कर्म पूरा हो गया। आसपास सभी लोग इकट्ठे हो गए और चिल्लाने लगे कि, बस वाले को पकड़ो और उसे मारो। ये लोग ऐसा ही करते हैं। इस बस का नंबर ले लो।

उन भाई ने सभी को शांत करवाते हुए कहा, "किसी का नंबर लेने की ज़रूरत नहीं है। आप और कुछ मत कीजिए, बस इस स्कूटर को साइड में कर दीजिए और मेरे लिए एक रिक्शा बुलवा दीजिए। मैं उस्मानपुरा में रहता हूँ। मुझे वहाँ जाना है।"

उनके हाथ में चोट लगी थी और हाथ पर सूजन आ गई थी। कपड़े भी थोड़े फट गए थे। उन्हें और कुछ नहीं बस यही लग रहा था, कि नीरू माँ क्या कहेंगे... कि तू जहाँ भी जाता है वहाँ ठीक से नही रह पाता। ऐसा डर था अन्य भाईयों ने नीरू माँ को जब घटना के बारे में बताया तो नीरू माँ ने तुरंत उन्हें बुलवाया।

नीरू माँ ने उनका हाथ देखा। वह भाई ने कहा, नीरू माँ, ज्ञान हाज़िर रहा था, मुझे किसी का दोष नहीं दिखा। व्यवस्थित का ज्ञान हाज़िर था।

नीरू माँ ने कहा, बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। अब तुरंत होस्पिटल जाओ।

होस्पिटल गए तो पता चला कि फ्रेक्चर है, इसलिए पट्टी बाँध दी।

उन भाई को सत्संग करना नहीं आता था। अन्य सभी भाई सत्संग करने जाते थे लेकिन उन भाई को ऐसा ही लगता रहता कि वे सत्संग नहीं कर पाएँगे। उन्होंने ब्रह्मचर्य कि बुक में पढ़ा था कि ब्रह्मचारी कैसा होना चाहिए कि ब्रह्मचर्य में स्ट्रोंग हो। उपदेश देना नहीं आए तो चलेगा लेकिन ब्रह्मचर्य में पावरफुल रहना चाहिए। तभी से उन्होंने तय कर लिया कि हमें सत्संग नहीं आएगा तो चलेगा लेकिन ब्रह्मचर्य स्ट्रोंग रखना है। इसमें पूरी ज़िंदगी कुछ बिगड़ने नहीं देना है।

इसलिए जब अन्य ब्रह्मचारी भाई सत्संग करते तो उन्हें देखकर ऐसा लगता रहता कि, ये सभी सत्संग करते हैं, लेकिन मुझसे तो होता नहीं है। अब, मुझसे कैसे हो पाएगा?

अंततः उन्होंने अपनी यह उलझन नीरू माँ के सामने व्यक्त करते हुए कहा, नीरू माँ, ये सभी भाई इतने सत्संग करते हैं, सभी जगह जाते हैं। मैं तो सत्संग नहीं कर सकता। तो मुझे ज्ञान किस तरह उत्पन्न होगा? इस मोक्षमार्ग में मैं किस तरह आगे बढ़ूँगा? मुझसे सत्संग होता ही नहीं है। वाणी निकलती ही नहीं है तो मुझे क्या करना चाहिए?

नीरू माँ ने प्रेम से कहा, युद्ध हो और कोई कहे कि मुझे तलवार चलाना आता है, जब दुश्मन आए तब इस तरह अंदर घुसना चाहिए, ऐसा करना चाहिए, वैसा करना चाहिए... ऐसे दो-तीन घंटे भाषण दे, उसकी कीमत ज्यादा है या जो युद्ध जीतकर वापस आ जाए, उसकी कीमत ज्यादा है?

उन भाई ने कहा, युद्ध जीतकर वापस आ जाए उसी की कीमत ज्यादा है।

नीरू माँ ने कहा, बस तो। तुझे एक्सिडेन्ट के समय जो ज्ञान हाज़िर रहा था उसकी

कीमत ज़्यादा है। इसकी कोई कीमत नहीं है। ऐसा करना चाहिए, ऐसा करना चाहिए ऐसा कहते हैं वह एक इन्फॉर्मेशन है। जो प्रेक्टिकली अनुभव में आए उसकी कीमत है। तुझे व्यवस्थित का ज्ञान हाज़िर रहा न वह अनुभव वाली वाणी ऑटोमेटिक निकलेगी और लोगों के काम आएगी।

तब से भाई का कॉन्फिडेन्स ज़बरदस्त बढ़ गया और उन्हें समझ में आया कि कीमत ज्ञान में रहने की है। अभी सत्संग नहीं होता तो प्रैक्टिकल लाइफ में ज्ञान का अनुभव करते रहो। फिर सब ऑटोमैटिक होगा।

ज्ञानी उपयुक्त समय में एक्ज़ेक्ट प्रसंग याद दिलवाकर कितनी अद्भुत शक्ति दे देते हैं...

मीठी यादें २

एक ब्रह्मचारी बहन को कुत्ते ने काट लिया था। उसे ग्लूकोज़ की बहुत सी बोतलें चढ़ाई गईं। वैसे भी उनकी तबियत अच्छी नहीं थी। वे बहुत कमज़ोरी का अनुभव कर रहीं थीं। वे पूज्यश्री के दर्शन करने गईं।

पूज्यश्री को हार पहनाकर जैसे ही वे चरणस्पर्श करके खड़ीं हुईं कि तुरंत ही पूज्यश्री ने कठोर शब्दों में कहा, "कुत्ते ने काटा है तो उसमें इतना मान खा रहे हो?"

यह सुनकर वे बहन तो एकदम चौंक गईं और वे पूज्यश्री को देखती ही रह गईं कि अचानक क्या हो गया?

पूज्यश्री ने उनका हार वापस दे दिया और फिर तुरंत ही वे नॉर्मल हो गए और पूछा कैसा है, जुदापना की जागृति रहती है? आदि।

फिर उन्होंने उस ब्रह्मचारी बहन के साथ पाँच-दस मिनिट बात की। उस बहन को तो कुछ पता ही नहीं चला कि क्या हो गया।

उस शाम आप्तपुत्री बहनें उनसे मिलने आई थीं। उनमें से एक आप्तपुत्री बहन ने उनसे कहा कि, पूज्यश्री ऐसा कह रहे थे कि अभी कुदरती संयोगों की वजह से उन्हें वेदना आई है, उसमें उन्हें आत्मा की ओर जाना चाहिए। उसके बजाय सभी उसकी देखभाल कर रहे हैं और संभाल रहे हैं, तो उसके मान में पड़ गई हैं।

यह सुनते ही वे बहन तो सोच में पड़ गईं। आप्तपुत्री बहन उन्हें समझाते हुए बोलीं ज्ञानी की दृष्टि ऐसी होती है कि आप कहाँ गिर रहे हैं वह आपको दिखा देते हैं। आपने कितना अच्छा किया वह तो उन्हें पता ही होता है लेकिन जहाँ आपमें कमी दिखती है, वहाँ किस तरह आगे बढ़ना है, वह दिखा देते हैं।

उसके बाद उन बहन ने हूँफ लेने वाला उनका अहंकार दिखाया, बुद्धि का ज़ोर दिखा कि यह जो सब उनकी देखभाल कर रहे हैं, उनका बहुत ध्यान रख रहे हैं, वह उन्हें कितना मीठा लग रहा है। पूरे मिठास में पड़ गए हैं। आत्मा में जाने का बेस्ट अवसर था तो वहाँ गड्ढे में गिर गए।

है न! ज्ञानी की ज़बरदस्त करुणा...

नेपोलियन की माता

नेपोलियन! यह नाम किसने नहीं सुना है? नेपोलियन, यानी उनके साथ दिग्विजयी शब्द जुड़ ही गया है।

नेपोलियन जब नौ साल का था तब एक बार वह अपनी छोटी बहन ईलिजा के साथ तितलियाँ पकड़ने का खेल खेल रहा था। माँ का सख्त हुक्म था कि यहीं खेलना, दीवार के उस पार रास्ते पर मत जाना। लेकिन एक तितली का पीछा करते हुए नेपोलियन दीवार लांघकर उस पार चला गया। उसने दीवार लांघने में बहन की भी मदद की। फिर दोनों तितली के पीछे दौड़े। इतने में एक लड़की टोकरी में अंडे लेकर बाज़ार में बेचने के लिए जा रही थी, उसे नेपोलियन की बहन का धक्का लगा, लड़की के हाथ से टोकरी गिर गई, अंडे फूट गए। लड़की रोने लगी।

अब दोनों भाई-बहन घबरा गए।

माता रोज़ नाश्ते के लिए बच्चों को एक फ्लोरिन (सिक्का) देती थीं। नेपोलियन ने जेब में हाथ डालकर देखा तो उसमें दो फ्लोरिन थे। उसने उन्हें निकालकर उस लड़की के हाथ में देते हुए कहा, "रो मत, यह ले ले!"

लड़की ने दो फ्लोरिन ले लिए, लेकिन वह रोती ही रही। वह रोते-रोते बोली, "दो फ्लोरिन में क्या होगा? घर पर मेरी माँ बीमार है, घर पर सभी भूखे हैं। यदि अंडे बिक गए होते तो उससे हमारे तीन दिन का खाना पूरा हो गया होता!"

अब भाई-बहन उस लड़की को लेकर घर आए।

घर में कदम रखते ही माता ने उन्हें बहुत डाँटा, "मेरे मना करने पर भी दीवार लांघकर तुम गए ही क्यों? आज तुम बड़ों की आज्ञा नहीं मानते हो, कल अपने ऊपर वाले की आज्ञा नहीं मानोगे। ऐसा चलेगा ही कैसे! आज्ञाभंग अर्थात् विश्वास भंग। ऐसा नहीं चलेगा।

नेपोलियन ने तुरंत ही अपनी भूल स्वीकार कर ली। और माफी मागी। फिर ईलिजा ने डरते-डरते कहा, "माँ, मुझसे एक बड़ा गुनाह हो गया है।"

ऐसा कहकर उसने अंडे गिराने की बात बता दी।

यह सुनकर माता ने कहा, "किसी का ऐसा नुकसान करके भाग नहीं जाना चाहिए! आपको उसका पूरा हिसाब करना चाहिए।"

अब नेपोलियन ने कहा, "माँ, आप मुझे दो फ्रेंक (रुपया जैसा फ्रेंच सिक्का) उधार दीजिए तो मैं इस लड़की को हिसाब के रूप में दे दूँ।"

माता ने हँसकर कहा, "दे देती हूँ लेकिन फिर तुझे चार महीने तक नाश्ते के लिए कुछ नहीं मिलेगा।"

नेपोलियन ने कहा, "ठीक है, मुझे मंजूर है।"

माता से पैसे लेकर नेपोलियन ने लड़की को दे दिए। इस तरह लड़की को अंडे के पूरे पैसे मिल गए, इसलिए उसने पहले दिए हुए दो फ्लोरिन नेपोलियन को वापस देते हुए कहा, "ये ज्यादा है, इन्हें में नहीं लूँगी!"

लड़की की ऐसी ईमानदारी देखकर नेपोलियन की माता प्रसन्न हो गई। उन्होंने कहा, "लड़की, मुझे अपने घर ले चल!"

माता के साथ नेपोलियन और ईलिजा भी उस लड़की के घर गए। गरीब घर था। लड़की की बीमार माँ पलंग पर सोई हुई थी, तुरंत ही नेपोलियन की माता उसकी सेवा करने में लग गई। एक लड़का थोड़ी दूर लकड़ी काट रहा था। नेपोलियन उस लड़के के पास बैठ गया। थोड़ी देर में दोनों बातें करते-करते दोस्त बन गए।

नेपोलियन की माता ने उस बीमार स्त्री की देखभाल की। उसके लिए दवाई और इलाज की व्यवस्था की।

नेपोलियन में उनकी उदार चरित्र माता का प्रतिबिंब भासित होता था।

उस समय फ्रेंच और अंग्रेजों के बीच लड़ाईयाँ चल रहीं थी। ऐसी एक लड़ाई में कितने ही अंग्रेज सैनिक फ्रेन्च सेना के कैदी थे। उनमें से एक कैदी एक छोटी सी नाव में समुद्र के रास्ते भागते हुए पकड़ा गया। उसे नेपोलियन के सामने लाया गया। नेपोलियन ने कहा, "तुम मूर्ख हो। ऐसी नाव में क्या तुम समुद्र पार कर सकते थे? क्यों तुमने ऐसा साहस किया?"

सैनिक ने कहा, "और दूसरा कोई उपाय नहीं था। घर पर मेरी माँ बीमार है और मुझे याद कर रही है। माता अंतिम समय अपने बेटा का मुँह देख सके इसलिए मुझे यह साहस करना पड़ा। सरकार, मुझे अब मृत्यु की ही सज़ा दीजिए, जिससे मेरी माता को ऐसा न लगे कि मैंने उनकी उपेक्षा की!

माता के प्रति सैनिक का वह भाव देखकर नेपोलियन को उसकी माता याद आ गई। उसने कहा, "सैनिक, तेरे जैसा मातृभक्त तो जगत् का जवाहर है! मैं तेरा गुनाह माफ करता हूँ और तू जल्दी से जल्दी अपनी माता से मिल सके ऐसा बंदोबस्त करता हूँ।"

ऐसा कहकर नेपोलियन ने उसे अच्छी तरह सही सलामत उसके घर पहुँचा दिया।

जगत् में ऐसी घटनाएँ होती हैं, इसलिए तो जगत् जीने जैसा लगता है।

बच्चों के साथ पूज्यश्री

१

प्रश्नकर्ता: जब आप छोटे थे तब आपको खाना खाने में प्रॉब्लम होती थी?

पूज्यश्री: खाने के मामले में कभी भी प्रॉब्लम नहीं होती थी। छोटा था तब, बड़ा हुआ तब, ज्यादा बड़ा हुआ तब, लघुत्तम हुआ तब, कभी भी प्रॉब्लम नहीं हुई। जो बनाए वह खा लेना है। और खुशी से खाना है। आपको प्रॉब्लम होती है?

प्रश्नकर्ता: हाँ।

पूज्यश्री: लोगों को खाने के लिए नहीं मिलता, हमें मिलता है तो शांति से खा नहीं लेना चाहिए? एक दिन यदि पसंद का नहीं होता लेकिन दूसरे दिन पसंद का होता ही है। और नापसंद तो मन को ही होता है। यदि जीभ को थोड़ा सा खिलाएँ तो वह अंदर पेट में चला ही जाता है, कुछ भी नुकसान नहीं होता। हमें भी लगता है कि यह बाहर तो नहीं निकला। शरीर तो स्वीकार कर ही लेता है। मन किच-किच करता रहता है। नापसंद खाते हैं तो शरीर निरोगी रहता है। अतः ज्यादा नुकसान नहीं होगा, क्या? थोड़ी-थोड़ी प्रेक्टिस करना कि नापसंद भी खा लेना है। फिर दो-चार दिन में पसंद का तो आता ही है। नहीं आता?

प्रश्नकर्ता: आता है।

पूज्यश्री: मम्मी तो प्रेम से बनाती हैं इसलिए शोर नहीं करना है। उन्हें दुःख न हो जाए ऐसा करना है।

प्रश्नकर्ता : हाँ।

२

प्रश्नकर्ता : आप यहाँ हर रोज़ सत्संग करने आते हैं तो क्या आपको सत्संग करने में बोरियत नहीं होती?

पूज्यश्री: आप कभी खेलने जाते हो?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

पूज्यश्री: तो खेलने में बोरियत नहीं होती है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

पूज्यश्री: हां। इसी तरह यह आत्मा का खेल है। इसलिए इसमें बोरियत नहीं होती। इसे आत्मरमणता कहते हैं। वह पुद्गल की रमणता है। उसमें बोरियत होती है। फिर दूसरा चाहिए, तीसरा चाहिए, चौथा चाहिए। यहाँ तो आत्मा की रमणता में कुछ भी दुःख नहीं रहता। उल्टा सभी को आनंद होता है और खुद को भी आनंद होता है। और यदि हम ज्यादा खेलते हैं तो मम्मी को गुस्सा आता है। घर में नहीं बैठता और खाता नहीं है, पढ़ता नहीं है। यहाँ तो कोई आवाज़ ही नहीं करता।

प्रश्नकर्ता : दो-दो घंटे लगातार सीट पर बैठना। आप ऐसा सालों से कर रहे हैं तो कभी बोरियत नहीं होती?

पूज्यश्री: नहीं होती। आपका दुःख दूर होता है तो मुझे ज्यादा आनंद होता है।

३ प्रश्नकर्ता : आप बच्चों से कब खुश होते हैं?

पूज्यश्री: जब बच्चे दूसरों को दुःख नहीं देते, उन्हें परेशान नहीं करते, मम्मी-पापा को राज़ी रखकर काम करते हैं तो मैं बहुत खुश होता हूँ कि कितना अच्छा बच्चा है। सब सहज होना चाहिए। यदि हम मम्मी-पापा को खुश रखें तो इतना बहुत हो गया। वे खुश हो जाएँ हमें ऐसा जीवन जीना चाहिए। यदि मम्मी-पापा खुश रहेंगे तो सभी खुश हो जाएँगे। टीचर भी खुश हो जाएँगे और गुरु भी खुश हो जाएँगे।

४

प्रश्नकर्ता: नीरू माँ और दादा को कैसे यूथ अच्छे लगते हैं?

पूज्यश्री: सभी यूथ अच्छे लगते हैं। क्योंकि आज के यूथ बहुत अच्छे और प्योर हैं। थोड़े से मोही हो गए हैं लेकिन दिल के बहुत साफ हैं और जो दिल के साफ होते हैं वे सभी बहुत अच्छे लगते हैं। सब से ज्यादा तो अभी यूथ दादा का कितना काम संभाल रहे हैं। इसी कम्प्यूटर का सद्उपयोग कर रहे हैं। दादा का कितना सारा काम यूथ ने ही संभाला हुआ है। फिर बड़े होकर और भी ज़िम्मेदारी से काम संभालते हैं। यदि दादा का काम करते हैं तो दादा बहुत राज़ी होते हैं। यदि महात्माओं की सेवा करते हैं तो भी बहुत राज़ी होते हैं।

५ प्रश्नकर्ता: आपकी दादा या नीरू माँ के साथ ऐसी कोई मज़ेदार घटना हुई है?

पूज्यश्री: हुई तो होगी लेकिन मेरे लिए अभी याद करना मुश्किल है।

प्रश्नकर्ता: जब आप से भूल हुई हो तब दादा और नीरू माँ ने आपको कुछ कहकर ठीक किया है?

पूज्यश्री: हाँ, ठीक किया गया है न! उनका यही काम। भूल का तो हमें पता ही नहीं चलता कि हम क्या भूल कर रहे हैं। वे जब टोकते हैं तभी समझ में आता है। और ज़रा डाँटे कि ऐसा किया जाता होगा? फिर मैं भी दीपक से कहता कि, ऐसा किया जाता होगा? कितनी बड़ी भूल कर दी। दीपक कबूल करता है कि, नहीं, नहीं अब नहीं करूँगा। तय करता है, फिर और क्या। जब वे दिखाते तभी दिखती, वर्ना खुद को तो पता ही नहीं चलता है। वास्तव में तो यदि कोई बताएँ तो तुरंत स्वीकार लेना चाहिए कि, अरेरे, मुझे पकड़ में नहीं आ रहा था। यदि हमारे बाल ऊँचे-नीचे हैं तो आईने में दिखते हैं न? तो क्या आईने की भूल निकालते हैं या फिर अपने बाल ठीक करते हैं?

प्रश्नकर्ता: बाल ठीक करते हैं।

पूज्यश्री: हं...। ये सभी आईने कहे जाते हैं। यदि कोई भूल बताता है तो तुरंत पकड़ लेना चाहिए। ओहोहो। हमारी भूल है। कमज़ोरी है। कमी है। चलो ध्यान रखेंगे। अच्छा हुआ बताया। उपकार मानना चाहिए। तो हमारी भूल कम होगी।

संतों की सहज क्षमा

एक बार छत्रपति शिवाजी के गुरु, समर्थ रामदास अपने अनुयायियों के साथ शिवाजी के पास जा रहे थे।

रास्ते में अनुयायियों को भूख लगी। पास ही एक गन्ने का खेत था। खेत के मालिक की अनुमति लिए बिना अनुयायी गन्ने तोड़ लाए। मालिक को इस बात का पता चला। समर्थ रामदास की पहचान नहीं होने की वजह से उसने गुरु और उनके अनुयायियों को बहुत मारा। सभी ने शांति से मार खा ली और अपने रास्ते बढ़ गए। शिवाजी के महल पहुँचकर किसी ने इस बारे में कुछ नहीं कहा।

जब शिवाजी अपने गुरु को स्नान करवा रहे थे तब उन्हें गुरु की पीठ पर मार के लाल निशान नज़र आए। उन्होंने गुरु से कारण पूछा लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। लेकिन शिवाजी ने बात नहीं छोड़ी। उन्होंने हकीकत का पता लगा लिया और खेत के मालिक को अपने समक्ष आने का हुक्म दिया।

खेत के मालिक को देखकर गुरु जी ने शिवाजी से उसे बुलाने का कारण पूछा।

शिवाजी ने जवाब दिया, "जिसने मेरे गुरु और उनके अनुयायियों को चोट पहुँचाई है, उसे सज़ा मिलनी ही चाहिए।"

गुरु ने कहा, "इसमें खेत के मालिक का बिल्कुल भी दोष नहीं है। भूल तो हमारी ही कही जाएगी कि हम पूछे बिना उनके खेत से गन्ना तोड़ लाए। गन्ने का नुकसान और उन्हें यहाँ बुलवाकर परेशान करने के बदले में उन्हें भव्य भेंट मिलनी चाहिए।"

जिसने मन में सज़ा की तैयारी की थी, उसे सिर्फ सहज क्षमा ही नहीं लेकिन एक बड़ा इनाम भी मिला।

इस तरह, संत हमेशा सामने वाले को निर्दोष देखकर सहज क्षमा देते हैं और अपने दोष देखकर उनसे मुक्त होते हैं।

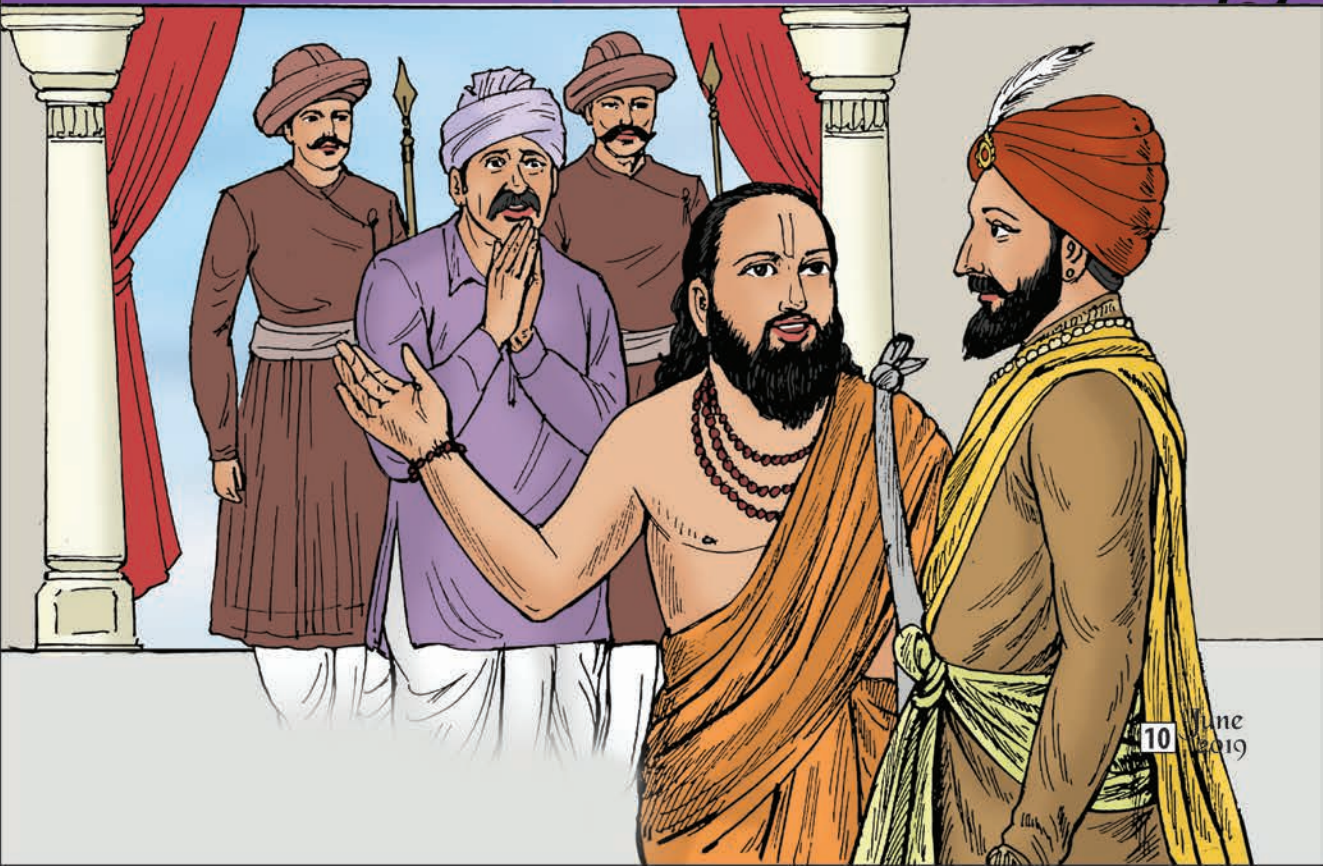

शिक्षक का रोल

जैन आचार्य श्री रत्नसुंदर सूरीश्वर जी ने अपने शिक्षक को याद करके एक प्रसंग कहा है...

मेरी कक्षा में एक विद्यार्थी मित्र ने मेरे शिक्षक से पूछा, "साहब २ + २ = ४ ही क्यों होता है? तीन या पाँच क्यों नहीं होता।

शिक्षक ने मेरे सहयोगी से कहा, "जब तुम बड़े हो जाओगे और बाज़ार में जाओगे, लेन-देन करोगे तब यदि किसी गरीब को पैसे देने हों, तब तुम २ + २ =३ न करो इसलिए २ + २ =४ होते हैं।

और इस लेन-देन के व्यवहार में यदि तुम्हें किसी से पैसे लेने हैं तब तुम २ + २ =५ न ले लो इसलिए २ + २ =४ होते हैं।

सवाल गणित का था, लेकिन उसमें उनके शिक्षक ने जिस तरह से नैतिकता सिखाई वह आज भी धर्मगुरु को याद है।

एक व्यक्ति के विकास में एक शिक्षक की भूमिका का कितना महत्त्व है!

यह तो नई ही बात है !

भगवान के यहाँ हार्टिली इंसान का काम है। वहाँ बुद्धि नहीं होगी तो चलेगा लेकिन हार्ट नहीं होगा तो नहीं चलेगा। बुद्धि अर्थात् खुद के लिए ही सोचती है और हार्ट सब के मारे में सोचता है।

जिसे कोई भी इच्छा होती है उसे भगवान नहीं कहते।

जो अपनी सभी भूलों को खत्म कर देता है उसे भगवान कहा जाता है।

अक्ल तो उसे कहेंगे कि जो सभी रास्ते ढूँढ निकाले, कहीं भी उलझे नहीं और **चेहरा हमेशा हँसता** ही रखे।

भूख किसकी?

पूरे जगत् को जीतने के लिए निकले हुए सिकंदर बादशाह की यह बात है। उनमें हिंमत, साहस और बहादुरी भरपूर थे। विजय के नशे में उसने कई गाँवों को उजाड़ दिया था। उसने असंख्य लोगों का निर्दयतापूर्वक कत्ल करके उन लोगों की धन संपत्ति लूट ली थी।

एक बार उसने एक ऐसे नगर पर चढ़ाई की, जहाँ स्त्रियों और बच्चों के सिवाय और कोई नहीं बचा था। उस गाँव के सभी पुरुष सिकंदर के साथ एक लड़ाई में मारे गए थे। वहाँ की स्त्रियाँ निराधार थीं। आत्मरक्षा के कोई भी साधन उनके पास नहीं थे।

सिकंदर ने चारों ओर नज़र घुमाई, लेकिन एक भी पुरुष उसे दिखाई नहीं दिया। वह सोच में पड़ गया। अब क्या किया जाए? स्त्री और बच्चों के साथ तो युद्ध नहीं किया जा सकता। उसे नियम का पता था अतः शस्त्रहीन स्त्रियों के साथ युद्ध करने का कोई सवाल ही नहीं था। उसका दिमाग़ चकरा गया। उसे कुछ सूझ नहीं रहा था।

उसके पास कुछ ही सैनिक थे। बाकी की सेना पीछे आ रही थी। सैनिकों का इंतज़ार करने में दोपहर हो गई।

इस ओर सिकंदर को भूख लग रही थी। नगर में उसे कोई सामने से खाना खाने के लिए बुलाए ऐसी कोई संभावना ही नहीं थी।

नगर के सभी घरों के दरवाज़े बंद थे। सभी को सिकंदर और उसकी सेना का डर था। घर में घुसकर कोई गलत काम कर दें तो! इस से भयभीत होकर नगर की सभी स्त्रियों ने अपने बच्चों को लेकर घर के दरवाज़े बंद कर दिए थे।

अब सिकंदर को ज़ोरदार भूख लग रही थी।

भूख एक ऐसा दुःख है, जो सुख के सागर में मज़े करते हैं उन्हें भी दुःखी कर देती है।

भूख एक ऐसी पीड़ा है, कि जो बादशाही ठाठ से रहते हैं उन्हें भी भिखारी के सामने हाथ फैलाने के लिए मज़-बूर कर देती है।

भूख एक ऐसी कसौटी है, जो अनुकूलता के भंडार पास में होते हुए भी कड़ी मज़दूरी करवाने के लिए मज़बूर कर देती है।

कहा है न, "भूख नहीं देखती जूठे चावल।"

जब भूख लगती है तब मनुष्य क्या नहीं करता? सब करता है। सिकंदर भी एक बंद घर के दरवाज़े के पास खड़ा हो गया। उसने दरवाज़ा खटखटाया। थोड़ी देर में दरवाज़ा खुला। एक अधेड़ उम्र की स्त्री

एक लकड़ी के सहारे बाहर आई।

सिकंदर ने कहा, "माँजी! मुझे बहुत भूख लगी है। यदि घर में कुछ खाने के लिए हो तो दीजिए ना।"

वृद्ध स्त्री ने सिकंदर को घर के अंदर बुलाया। एक जगह बैठने का इशारा करके माँजी अंदर गई। थोड़ी देर में रुमाल से ढका एक थाल ले आई। थाल सिकंदर के सामने रखा। भूख से त्रस्त सिकंदर ने जैसे ही रुमाल हटाकर थाल पर टूट पड़ने के लिए हाथ बढ़ाया, तभी आश्चर्य...

थाल में भोजन की कोई सामग्री ही नहीं थी। सिर्फ सोने-चाँदी के गहने थे।

सिकंदर यह देखकर अत्यंत आवेश में आ गया। वह ज़ोर से चिल्लाने लगा, अरे ए बुढ़िया! यह तू क्या लाई? मैंने तुझ से खाने की सामग्री मंगवाई थी, न कि सोने-चाँदी का थाल! क्या इससे पेट भरता है?

मौका देखकर बुढ़िया ने जवाब दिया, "तू कौन? सिकंदर ही है न? आज तक मैंने तेरा नाम तो बहुत सुना, आज तुझे प्रत्यक्ष देखने का मौका मिल गया। मैंने तो सुना है कि तू सोने-चाँदी और पैसों का बहुत भूखा है और इसीलिए तू अपना देश छोड़कर यहाँ तक आया है। तेरे देश में तो धन के ढ़ेर हैं, फिर भी तू यहाँ तक आया है, वह सिर्फ धन के लिए ही न। तो अब जब तुझे धन की प्रचंड भूख है तो मुझे तेरी थाली में सोने-चाँदी ही परोसने च ाहिए या और कुछ?

सिकंदर तो यह सुनते ही सुन्न हो गया। काटो तो खून न निकले, ऐसी उसकी स्थिति हो गई। वह टुकुर-टुकुर वृद्धा के मूँह को देखता ही रहा। बुढ़ी माँ क्या कहना चाहती है, वह उसे समझ में आ गया। बिना युद्ध के एक स्त्री ने उसे किस तरह हरा दिया, उसकी उसे समझ आ गई।

वह माँजी के पैरों में गिर गया। उसने कहा, "आज तक मैं बहुत युद्ध कर चुका हूँ। हर युद्ध में मेरी विजय हुई है। मुझे अपने आप पर अभिमान था। मैं उसके नशे में चूर था। मुझे कई लोग समझाने आते थे लेकिन मैं समझने के लिए ही तैयार नहीं था।

ओ माँ! आज आपने कमाल कर दिया। खून की एक भी बूँद गिराए बिना, आपने मेरे जैसे अभिमानी को पराजित कर दिया।"

वृद्ध स्त्री ने उसे दोनों हाथों से उठाया। उसके सिर पर बेटे की तरह हाथ फिराया और फिर उसे बहुत प्रेम से भोजन करवाया। सिकंदर ने नगर से विदा लेने से पहले नगर के द्वार पर एक शिलालेख लिखवाया।

जिसमें लिखवाया :

"अज्ञानी सिकंदर को इस नगर की एक महान नारी ने एक सच्ची सीख दी, और उसने धन की निरर्थकता का भान करवाया।"

आठ से बारह वर्ष के बच्चों के लिए अलग-अलग सेन्टर में हुए समर कैम्प की झलक...

पूज्यश्री के ६६ वें जन्मदिन के अवसर पर बच्चों द्वारा सांस्कृति कार्यक्रम...

चिड़िया

एक आश्रम के शिष्य बहुत ही आलसी बन गए थे। गुरु ने अपने शिष्यों को इकट्ठा किया।
चलो! आज मैं तुम सबको एक कहानी सुनाता हूँ।
इब्राहिम नामक एक विद्वान ने रास्ते में एक स्वस्थ इंसान को भीख माँगते हुए देखा।
चल मेरे साथ, मैं तेरे खाने-पीने की व्यवस्था कर देता हूँ।
इब्राहिम उस भिखारी को एक दुकानदार के पास ले गए।
इस भाई की रोज़ीरोटी निकले ऐसा कोई छोटा-मोटा काम मिल सकता है?

दुकानदार इब्राहिम का आदर करता था इसलिए उसने कोई प्रश्न नहीं पूछा।
हाँ, हाँ ज़रूर साहब। मैं इसे ज़रूर काम दूँगा।
भिखारी को नज़दीक के गाँव में जाकर, चीज़ें बेचनी थीं।
कुछ दिनों बाद...
यह क्या? तुमने फिर से भीख माँगना क्यों शुरू कर दिया?
साहब, आपको बताता हूँ। एक दिन मैंने एक अंधी चि ड़िया को देखा। मुझे यह जानने की इच्छा हुई कि चिड़िया अपना पेट कैसे भरती होगी?
कुछ समय के लिए मैं उसे देखता रहा। देखा तो, कुछ देर बाद एक दूसरी चिड़िया अंधी चिड़िया के लिए खाना ले आई।

Akram Express

June 2019
Year : 7, Issue : 3
Conti. Issue No.: 76

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
LPWP Licence No. PMG/HQ/081\2018
valid up to 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद पप हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८९५५००७५०० पर संपर्क करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मेगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025